कहानी

मिट्टी के घर से निकला नन्हा सितारा

शहर से करीब 20 किलोमीटर दूर बसे छोटे से गांव रामपुर में 11 साल का आरव अपने माता-पिता और छोटी बहन के साथ मिट्टी के घर में रहता था. उसके पिता गांव में मजदूरी करते थे और मां दूसरे घरों में काम करके परिवार का खर्च चलाती थीं. घर की आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर थी कि कई बार रात का खाना भी पूरा नहीं बन पाता था. इसके बावजूद आरव की आंखों में एक बड़ा सपना था—वह बड़ा होकर वैज्ञानिक बनना चाहता था और ऐसा यंत्र बनाना चाहता था, जिससे गांव के लोगों की जिंदगी आसान हो सके. आरव सरकारी स्कूल में पांचवीं कक्षा में पढ़ता था. उसके पास न महंगी किताबें थीं, न पढ़ाई के लिए अलग कमरा और न ही मोबाइल फोन.

स्कूल से लौटने के बाद वह घर के काम में माता-पिता का हाथ बंटाता और रात में मिट्टी के दीये की रोशनी में पढ़ाई करता था. कई बार हवा तेज चलने पर दीया बुझ जाता, लेकिन आरव हार नहीं मानता. वह फिर से बाती जलाता और अपनी कॉपी खोलकर बैठ जाता. उसकी मां अक्सर कहतीं कि आंखों पर जोर मत डालो, सुबह पढ़ लेना, लेकिन आरव मुस्कराकर कहता, 'अम्मा, सपना बड़ा है तो मेहनत भी बड़ी करनी पड़ेगी.' उसकी यही लगन स्कूल के विज्ञान शिक्षक शेखर सर ने भी देखी.

एक दिन उन्होंने बच्चों से पूछा कि अगर गांव में बिजली की समस्या दूर करनी हो तो वे क्या कर सकते हैं. बाकी बच्चे अलग-अलग जवाब देने लगे, लेकिन आरव चुपचाप अपनी कॉपी में कुछ बनाने लगा. शिक्षक ने पास जाकर देखा तो उसने पुराने डिब्बे, तार और साइकिल के छोटे हिस्से से एक ऐसा मॉडल बनाया था, जो हवा चलने पर घूमकर छोटी सी एलईडी जलाता था. मॉडल बहुत साधारण था, लेकिन उसमें आरव की सोच असाधारण थी. शेखर सर ने उसकी प्रतिभा को पहचाना और उसे स्कूल की विज्ञान प्रदर्शनी में शामिल होने के लिए कहा.

समस्या यह थी कि मॉडल बनाने के लिए जरूरी सामान खरीदने के लिए आरव के पास पैसे नहीं थे. अगले दिन शिक्षक ने उसे कबाड़ से मिले पुराने तार, मोटर और प्लास्टिक के टुकड़े दिए. आरव ने कई दिनों तक मेहनत की. कभी तार टूट जाता, कभी पंखा नहीं घूमता और कभी बल्ब नहीं जलता. हर असफल कोशिश के बाद वह मॉडल को फिर खोलता और गलती खोजने लगता. प्रदर्शनी के दिन उसका मॉडल स्कूल के मंच पर रखा गया. जब निर्णायकों ने उससे पूछा कि उसने यह मॉडल क्यों बनाया, तो आरव ने कहा, 'मेरे गांव में बिजली कई बार चली जाती है.

मैं चाहता हूं कि बच्चों की पढ़ाई अंधेरे में न रुके.' उसकी बात सुनकर वहां मौजूद लोग कुछ देर के लिए शांत हो गए. परिणाम घोषित हुआ तो आरव को पहला पुरस्कार मिला. पुरस्कार में उसे किताबों का एक सेट, स्कूल बैग और पांच हजार रुपये की छात्रवृत्ति मिली. आरव ने इनाम की रकम अपने लिए खर्च करने के बजाय उसका एक हिस्सा स्कूल की लाइब्रेरी के लिए किताबें खरीदने में देने की इच्छा जताई. उसकी इस बात ने सभी का दिल जीत लिया. धीरे-धीरे उसकी कहानी गांव से निकलकर जिले तक पहुंची. एक सामाजिक संस्था ने उसकी पढ़ाई की जिम्मेदारी उठाने का फैसला किया. अब आरव के घर में बिजली की समस्या तो वही थी, लेकिन उसके सपनों को रोशनी मिल चुकी थी. कुछ वर्षों बाद वही बच्चा जिला स्तर की विज्ञान प्रतियोगिता में पहुंचा और वहां भी पुरस्कार जीता. आरव आज भी अपने पुराने मिट्टी के घर को नहीं भूला है.

वह कहता है कि गरीबी ने उसे रोकने के बजाय मेहनत करना सिखाया. उसके पिता कहते हैं कि जिस बेटे को कभी किताब खरीदने के लिए पैसे नहीं मिलते थे, आज वही दूसरे बच्चों को किताबें बांटता है. आरव की कहानी गांव के दूसरे बच्चों के लिए भी मिसाल बन गई. अब कई बच्चे शाम को उसके साथ पढ़ने आते हैं. आरव उन्हें एक ही बात कहता है— 'सपनों की कीमत पैसे से नहीं, मेहनत से तय होती है.' मिट्टी के छोटे से घर में रहने वाले इस बच्चे ने साबित कर दिया कि परिस्थितियां चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, अगर इरादे मजबूत हों तो छोटी सी कोशिश भी बड़ी उड़ान बन सकती है.

बिंदु मिलाओ

रंग भरो

प्रेरक प्रसंग

युवाओं के प्रेरणास्त्रोत स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद और आत्मविश्वास की शक्तिभारत के महान संत और युवाओं के प्रेरणास्रोत स्वामी विवेकानंद का जीवन संघर्ष, आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प की अद्भुत कहानी है. उनका बचपन का नाम नरेंद्रनाथ दत्त था. वे बचपन से ही बहुत जिज्ञासु, बुद्धिमान और साहसी थे. उनके मन में हमेशा अनेक सवाल उठते रहते थे. वे किसी भी बात को बिना समझे स्वीकार नहीं करते थे. यही आदत आगे चलकर उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी ताकत बनी .नरेंद्रनाथ का परिवार शिक्षित और संस्कारी था, लेकिन उनके जीवन में एक समय ऐसा भी आया जब परिवार को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा. उनके पिता का अचानक निधन हो गया. परिवार की जिम्मेदारियां बढ़ गईं और घर की आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गई. कई बार घर में भोजन तक की समस्या खड़ी हो जाती थी.

ऐसे कठिन समय में नरेंद्रनाथ ने हार नहीं मानी .इसी दौरान वे ईश्वर और जीवन के सत्य को जानने के लिए बेचैन रहने लगे. वे कई विद्वानों और संतों से एक ही प्रश्न पूछते थे— 'क्या आपने ईश्वर को देखा है?' अधिकांश लोग उन्हें संतोषजनक उत्तर नहीं दे पाते थे. आखिरकार उनकी मुलाकात श्री रामकृष्ण परमहंस से हुई. नरेंद्रनाथ ने उनसे भी वही प्रश्न पूछा. रामकृष्ण परमहंस ने बिना किसी झिझक के कहा कि उन्होंने ईश्वर को देखा है और वे उन्हें उसी तरह अनुभव करते हैं, जैसे किसी व्यक्ति को सामने देखा जाता है. नरेंद्रनाथ उनके उत्तर से बहुत प्रभावित हुए. धीरे-धीरे उन्होंने रामकृष्ण परमहंस को अपना गुरु स्वीकार कर लिया. गुरु के मार्गदर्शन में नरेंद्रनाथ ने अपने जीवन का उद्देश्य समझा. उन्होंने महसूस किया कि जीवन केवल अपने लिए जीने का नाम नहीं है. समाज और देश की सेवा करना भी मनुष्य का कर्तव्य है. रामकृष्ण परमहंस के निधन के बाद नरेंद्रनाथ ने संन्यास धारण किया और वे स्वामी विवेकानंद के नाम से प्रसिद्ध हुए.

उन्होंने पूरे भारत की यात्रा की. इस दौरान उन्होंने गरीबी, अशिक्षा और सामाजिक समस्याओं को बहुत करीब से देखा. उन्होंने महसूस किया कि भारत की सबसे बड़ी शक्ति उसके लोग हैं, लेकिन उन्हें शिक्षा, आत्मविश्वास और सही दिशा की आवश्यकता है. उन्होंने युवाओं को जागरूक करने का संकल्प लिया. वर्ष 1893 में स्वामी विवेकानंद अमेरिका के शिकागो में आयोजित विश्व धर्म संसद में पहुंचे. वहां उन्हें बोलने का अवसर मिलना आसान नहीं था. उनके पास अधिक धन भी नहीं था और उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा. लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं छोड़ी. जब आखिरकार उन्हें मंच पर बोलने का अवसर मिला, तो उन्होंने अपने संबोधन की शुरुआत 'मेरे अमेरिकी भाइयों और बहनों' कहकर की. उनके शब्दों ने पूरे सभागार में उत्साह भर दिया. लोगों ने लंबे समय तक तालियां बजाकर उनका स्वागत किया. उन्होंने भारत की संस्कृति, आध्यात्मिकता और सहिष्णुता का संदेश पूरी दुनिया तक पहुंचाया .स्वामी विवेकानंद की सफलता केवल उनके भाषण की वजह से नहीं थी. उसके पीछे वर्षों की मेहनत, अध्ययन, आत्मविश्वास और संघर्ष था.

तितली के पैर में छिपी है स्वाद पहचानने की अनोखी मशीन

तितली को देखकर अक्सर हमारे मन में रंग-बिरंगे पंख, फूलों पर मंडराती खूबसूरत आकृति और प्रकृति की सुंदरता का ख्याल आता है. लेकिन यह नन्हा-सा जीव जितना सुंदर दिखाई देता है, उतना ही हैरान करने वाला भी है. तितली के बारे में सबसे रोचक बात यह है कि वह अपने पैरों से स्वाद चख सकती है. उसके पैरों में विशेष स्वाद पहचानने वाली कोशिकाएं होती हैं. जब तितली किसी पौधे या पत्ते पर बैठती है, तो वह अपने पैरों की मदद से यह पता लगाने की कोशिश करती है कि उस पौधे पर भोजन उपलब्ध है या नहीं और वह जगह अंडे देने के लिए सही है या नहीं. यानी इंसान जहां किसी चीज का स्वाद जानने के लिए जीभ का इस्तेमाल करता है, वहीं तितली के लिए उसके पैर भी स्वाद पहचानने का काम करते हैं.

यही कारण है कि तितली फूल या पत्ते पर बैठते ही केवल उड़ती नहीं रहती, बल्कि अपने आसपास के वातावरण को भी परखती है. तितली का जीवन चक्र भी प्रकृति के सबसे अद्भुत बदलावों में शामिल है. इसकी शुरुआत एक छोटे से अंडे से होती है. कुछ समय बाद अंडे से एक छोटी-सी इल्ली बाहर निकलती है. यह इल्ली देखने में तितली से बिल्कुल अलग होती है और उसका मुख्य काम खाना तथा तेजी से बढ़ना होता है. वह लगातार पत्तियां खाती है और अपने शरीर का आकार बढ़ाती रहती है. जब उसका विकास पूरा हो जाता है तो वह एक सुरक्षित स्थान चुनकर प्यूपा या क्रिसलिस की अवस्था में चली जाती है.

इसके अंदर उसके शरीर में जबरदस्त बदलाव होता है. कुछ समय बाद क्रिसलिस से एक खूबसूरत तितली बाहर निकलती है. शुरुआत में उसके पंख नरम और सिकुड़े हुए होते हैं, लेकिन थोड़ी देर बाद वे फैलकर मजबूत हो जाते हैं और तितली उड़ने लगती है. तितली के पंखों के रंग भी केवल सुंदर दिखने के लिए नहीं होते. कई प्रजातियां अपने चमकीले रंगों की मदद से साथी को आकर्षित करती हैं, जबकि कुछ तितलियां अपने पंखों को इस तरह इस्तेमाल करती हैं कि वे पेड़ की छाल, सूखे पत्ते या आसपास के वातावरण जैसी दिखाई देने लगती हैं.

भूल भुलैया

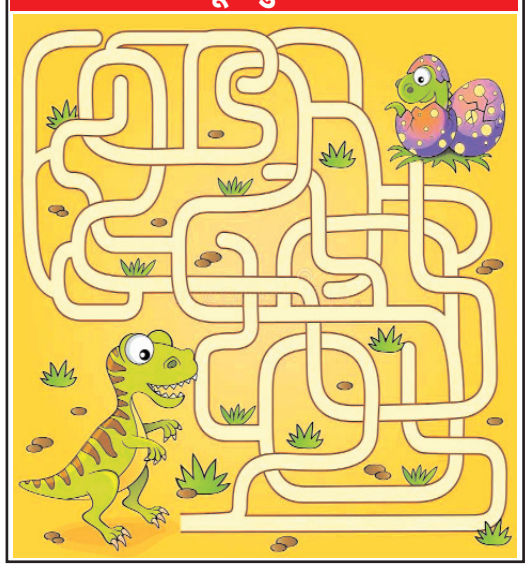

बारिश की पहली बूंदों से क्यों आती है मिट्टी की खुशबू?

जानकारी

गर्मियों के कई दिनों बाद जब आसमान में बादल छाते हैं और बारिश की पहली बूंदें सूखी धरती पर गिरती हैं, तो वातावरण में एक खास तरह की खुशबू फैल जाती है. इस खुशबू को महसूस करते ही बचपन की यादें ताजा हो जाती हैं और मन खुश हो जाता है. लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि आखिर सूखी मिट्टी पर बारिश की बूंद गिरते ही इतनी अच्छी खुशबू क्यों आने लगती है? इसका कारण केवल मिट्टी नहीं, बल्कि मिट्टी में मौजूद कई छोटे-छोटे प्राकृतिक पदार्थ होते हैं. वैज्ञानिक इस खास खुशबू को पेट्रिकोर कहते हैं.

लंबे समय तक बारिश नहीं होने पर मिट्टी और पौधों से निकलने वाले कुछ तेल जमीन की सतह पर जमा होते रहते हैं. इसके अलावा मिट्टी में रहने वाले कुछ सूक्ष्म जीव एक विशेष पदार्थ बनाते हैं, जिसे जियोस्मिन कहा जाता है. यही पदार्थ मिट्टी की उस खास खुशबू के लिए काफी हद तक जिम्मेदार होता है. जब बारिश की बूंदें सूखी जमीन पर गिरती हैं, तो वे मिट्टी की सतह पर मौजूद इन पदार्थों को हवा में बहुत छोटी-छोटी बूंदों के साथ फैला देती हैं. यही खुशबू हमारी नाक तक पहुंचती है.

दिलचस्प बात यह है कि बारिश की बूंदें जब जमीन से टकराती हैं, तो उनके आसपास छोटे-छोटे बुलबुले बन सकते हैं. ये बुलबुले फूटते समय मिट्टी और उसमें मौजूद पदार्थों के बेहद छोटे कणों को हवा में पहुंचा देते हैं. हवा में फैलने वाले यही सूक्ष्म कण बारिश के बाद आने वाली खुशबू को और ज्यादा महसूस कराने में मदद करते हैं .यह खुशबू केवल इंसानों को ही आकर्षित नहीं करती. जियोस्मिन नामक पदार्थ की गंध कुछ जीवों के लिए भी महत्वपूर्ण होती है. वैज्ञानिकों ने पाया है कि कुछ छोटे जीव मिट्टी में मौजूद इस गंध के प्रति आकर्षित होते हैं.

कविता

पिता घर की सबसे मजबूत छांव

पिता वह छांव हैं,
जो खुद धूप में जलते हैं,
हमारे सपनों की खातिर
हर मुश्किल से लड़ते हैं.

उंगली पकड़कर चलना सिखाया,
गिरकर फिर संभलना सिखाया,
खुद के हिस्से के सुख छोड़कर,
हमको आगे बढ़ना सिखाया.

उनकी आंखों में सपने कम,
हमारे सपने ज्यादा होते हैं,
चेहरे पर चाहे चिंता हो,
लबों पर हौसले होते हैं.

पिता कभी खुलकर कहते नहीं,
कि उन्हें भी दर्द होता है,
बच्चों की एक मुस्कान के लिए
हर गम उनसे दूर होता है.

जिन कंधों पर बैठकर हमने
दुनिया को पहली बार निहारा,
आज वही कंधे थक गए हैं,
पर अब भी हैं हमारा सहारा.

पिता कोई शब्द नहीं,
एक पूरा विश्वास हैं,
जीवन की हर कठिन राह में
वे हमारे साथ हैं.

जब तक सिर पर हाथ रहे उनका,
हर मुश्किल आसान लगती है,
पिता की दुआ साथ हो तो
हर मंजिल अपनी लगती है.

पिता हैं तो घर में हिम्मत है,
पिता हैं तो जीवन में आस,
पिता से बढ़कर इस दुनिया में
नहीं कोई अपना खास.

बूझो तो जानें

- ऐसी कौन-सी चीज है जिसके दांत बहुत सारे हैं, लेकिन वह काट नहीं सकती?

  उत्तर- कंघी

- मैं गोल-गोल घूमता हूं, लेकिन अपनी जगह से नहीं जाता. मैं कौन हूं?

  उत्तर-पंखा

- मेरे चार पैर हैं, लेकिन मैं चल नहीं सकता. मुझ पर बैठकर पढ़ाई भी कर सकते हो. मैं कौन हूं?

  उत्तर-कुर्सी

- मैं आसमान में दिखाई देता हूं, रात में चमकता हूं और कभी पूरा तो कभी आधा नजर आता हूं. मैं कौन हूं?

  उत्तर-चांद

- मेरे पंख नहीं हैं, फिर भी मैं आसमान में उड़ता हूं. मेरे पैर नहीं हैं, फिर भी मैं दौड़ता हूं. मैं कौन हूं?

  उत्तर-बादल

हंसी-ठिठोली

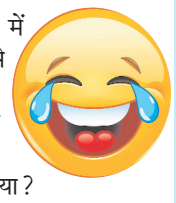

- टीचर: बताओ, दुनिया में सबसे ज्यादा नींद किसे आती है?
  बच्चा: जिसे सुबह स्कूल जाना होता है!
- मम्मी: बेटा, खाना खा लिया?
  बच्चा: हां मम्मी. मम्मी: क्या खाया
  बच्चा: डांट! आपने कहा था खाना खा लो, इसलिए जल्दी से खा लिया!
- टीचर: अगर तुम्हारे पास 10 टॉफियां हों और मैं 2 मांग लूं तो तुम्हारे पास कितनी बचेंगी?
  बच्चा: 10!
  टीचर: कैसे?
  बच्चा: क्योंकि मैं आपको दूंगा ही नहीं!
- पापा: बेटा, तुम परीक्षा में इतने कम नंबर क्यों लाए?
  बच्चा: पापा, मैं तो बहुत आगे जा सकता था.
  पापा: फिर गए क्यों नहीं?
  बच्चा: पीछे बैठे दोस्त ने कहा था, 'इतनी जल्दी मत जाना, पेपर अभी बाकी है!'

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स , लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें .**

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

उत्तर- 1. लड़की की आस्तीन का आकार अलग है, 2. हरे फूल की बनावट अलग है, 3. पानी के डिब्बे के ऊपरी हिस्से पर निशान अलग है, 4. नीचे पड़ी पेंसिल में अंतर है, 5. नीचे की ओर चित्र के किनारे/सामान में छोटा अंतर है.